पर्यावरण के प्रहरी (कौआ)

मुकेश कुमार शर्मा
जे.ई. (वरिष्ठ ग्रेड)
अनुरक्षण प्रभाग, रा.ज.स.

काला कौआ है लाचार,
करता नहीं कोई मुझको प्यार
मेरे अवगुण हर कोई गावे
गुणों पे किसी का ध्यान ना जावे
ऐसा नहीं बना है कोई
जिसमें ना कोई अवगुण होई
मान रहा मैं अवगुण खान
फिर भी चाहता हूँ सम्मान
मुझमें भी हैं, गुण दो, चार
उन पर भी तुम करो विचार
सुबह सवेरे तुम्हें जगाता
ब्रहम मूर्हत का पाठ पढ़ाता
उठ जाओ तुम सुन आवाज
स्वरथ्य रहने का समझो राज
पर्यावरण का मैं हूँ रक्षक
अशुद्धियों का मै हूँ भक्षक
यदि नहीं मैं करूँ सफाई
हो जाओगे रोगी भाई
तरह-तरह की हो बीमारी
उनकी कर लो तुम तैयारी
जिसके तुम हो गुण है गाते
उस कोयल के प्यारे बच्चे
मेरे द्वारा पाले जाते
मुझको बुरा कहा तो कहता ?
दूर कहीं छिप जाऊँगा
सच कहता हूँ दर्शन देने
फेर नहीं मैं आऊँगा ।